

Padma Shri



DR. VIDYA VINDU SINGH

Dr. Vidya Vindu Singh is educationist, writer, editor, speaker, propagator of Indian folk, religion and culture for more than 60 years. She has worked as Chief Editor, Dy. Director and Joint Director at U.P. Hindi Sansthan, Lucknow.

2. Born on 2nd July, 1945 at Village Jaitpur, Ambedkar Nagar, Uttar Pradesh, Dr. Vidya completed her M.A. Degree from Agra University, B.Ed. from Gorakhpur University and Ph.D from BHU, Varanasi.

3. Dr. Vidya has compiled the folk traditions, songs, stories, idioms, and beliefs in the field of worship, agriculture and environment. Through lectures, songs rendition and explanations of folk inheritance from a traditional and scientific point of view, she has helped in preserving and spreading the traditional Indian cultural values in the society. She has 118 publications to her credit and 16 more are under publication, includes books on child, adolescent adult education. Several of her books have received recognition and awards. Every year, she organizes a series of lectures on spiritual thinking which are published in a commemorative publication Sant Vivek which is distributed free of cost. Eminent freedom fighters, social workers, folk artists, environmentalists, writers, spiritual thinkers, journalists, Doctors etc. are honoured in such programmes. 132 eminent citizens have been felicitated in 26 such programmes. Every year, she also organizes a festival in her native village on extinct folk arts, religion and culture, which includes debates, plays, exhibition and competition etc. on relevant issues. Free medical health checkup camps are organized on this occasion.

4. Dr. Vidya has established Krishnapratap Vidyavindu Lokhit Nyas. This platform is also used for solving the problems and upgrading the quality of life of the local population living below the poverty line. She is actively associated with several cultural, literary and social institutions in the capacity of founder, patron, chairperson and member. Eight Scholars have done research for her works. Her works have been translated into Malyalam, Bengala, Telugu, Kashmiri, English, Oriya, Marathi, Nepali and Japanese languages. Her Poetic Collection "Sach ke Paanv" translated into Nepalese language has been awarded by Sahitya Academy, Delhi. She is the recipient of Senior Fellowship from Culture Department, Government of India for the study of folk arts.

5. Dr. Vidya has actively participated in various literary programmes, International Ramayana Conferences, International Hindi Conferences in India and abroad. She has been associated as an editor of many books and magazines. She has been the honorary editor of Prawasi Bhartiya, a quarterly Patrika published in Canada. She has edited the literary magazines Sahitya Bharti magazine, Atyev and Baal Vani Published by Uttar Pradesh Hindi Sansthan. She has associated in edition of works of senior literary authors including publications such as, Awadhi Granthawali, Apariharya Parikrama, Associate Editor of Braj Bhasha kosh, Awadhi kosh. She edited Saal Bhar Parv (by Dr.Vidya Nivas Mishra); Bhartiya Wangmay mein dharm aur Sanskriti; Hamare Akshar; Aarsh parampara evam adhunik bodh; Ram katha ka Vaishwik Paridrishya (by Shiv Singh Saroj); Translation of Jangnama on poetic tale of bravery and sacrifice of Chehlari Naresh Raja Balbhadra Singh and his soldiers. Her six lectures had been broadcast through e-path of Mahatma Gandhi International Hindi University, Wardha. She is editor in Ramkatha Vishva Kosh, Culture Department, Uttar Pradesh. More than 3500 of her articles have been published in various literary magazines. She has been associated with All India Radio and Doordarshan and other communication media as writer, director, coordinator for various serials, short films, features, plays, panel discussions etc.

पद्म श्री



डॉ. विद्या विन्दु सिंह

डॉ. विद्या विन्दु सिंह 60 वर्षों से अधिक समय से एक शिक्षाविद्, लेखक, संपादक, वक्ता, भारतीय लोक, धर्म व संस्कृति की प्रचारक रही हैं। उन्होंने उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ में मुख्य संपादक, उप निदेशक और संयुक्त निदेशक के रूप में काम किया है।

2. 2 जुलाई, 1945 में जैतपुर गांव, अंबेडकर नगर, उत्तर प्रदेश में जन्मी, डॉ. विद्या ने अपनी एम.ए. की डिग्री आगरा यूनिवर्सिटी से, बी.एड. गोरखपुर यूनिवर्सिटी से किया और बीएचयू, वाराणसी से पी.एचडी. की उपाधि हासिल की।

3. डॉ. विद्या ने उपासना, कृषि और पर्यावरण के विषयों में लोक परंपराओं, गीतों, कहानियों, मुहावरों और मान्यताओं का संकलन किया है। एक पारंपरिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से व्याख्यानों, गीतों और लोक विरासत की व्याख्या के जरिये, उन्होंने समाज में पारंपरिक भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को संरक्षित करने और उनका प्रचार-प्रसार करने में मदद की है। उनकी 118 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं और 16 प्रकाशनाधीन हैं, जिनमें बाल, किशोर, वयस्क शिक्षा पर पुस्तकें शामिल हैं। उनकी कई पुस्तकों को सराहना और पुरस्कार मिले हैं। वह हर वर्ष, आध्यात्मिक विचारों पर व्याख्यान की एक श्रृंखला आयोजित करती हैं जो एक स्मारक प्रकाशन संत विवेक में प्रकाशित होती है और उसका मुफ्त वितरण किया जाता है। ऐसे कार्यक्रमों में प्रख्यात स्वतंत्रता सेनानियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, लोक कलाकारों, पर्यावरणविदों, लेखकों, आध्यात्मिक विचारकों, पत्रकारों, डॉक्टरों आदि का सम्मान किया जाता है। ऐसे 26 कार्यक्रमों में 132 प्रतिष्ठित नागरिकों को सम्मानित किया गया है। वह हर वर्ष, अपने पैतृक गांव में विलुप्त लोक कलाओं, धर्म और संस्कृति पर एक महोत्सव भी आयोजित करती हैं, जिसमें प्रासंगिक मुद्दों पर वाद-विवाद, नाटक, प्रदर्शनी और प्रतियोगिता आदि होते हैं। इस अवसर पर निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया जाता है।

4. डॉ. विद्या ने कृष्णप्रताप विद्या विन्दु लोकहित न्यास की स्थापना की है। इस मंच का इस्तेमाल गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले स्थानीय लोगों की समस्याओं को सुलझाने और उनके जीवन को बेहतर बनाने के लिए भी किया जाता है। वह संस्थापक, संरक्षक, अध्यक्ष और सदस्य के तौर पर कई सांस्कृतिक, साहित्यिक और सामाजिक संस्थानों से सक्रिय रूप से जुड़ी हुई हैं। आठ विद्वानों ने उनके कार्यों पर शोध किया है। उनकी रचनाओं का मलयालम, बंगला, तेलुगु, कश्मीरी, अंग्रेजी, उड़िया, मराठी, नेपाली और जापानी भाषाओं में अनुवाद हुआ है। नेपाली भाषा में अनुदित उनके काव्य संग्रह "सच के पांव" को साहित्य अकादमी, दिल्ली द्वारा पुरस्कृत किया गया है। उन्हें लोक कलाओं के अध्ययन के लिए संस्कृति विभाग, भारत सरकार से सीनियर फेलोशिप मिली है।

5. डॉ. विद्या ने देश-विदेश में विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमों, अंतरराष्ट्रीय रामायण सम्मेलनों, अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलनों में सक्रिय रूप से भाग लिया है। वह कई पुस्तकों और पत्रिकाओं की संपादक हैं। वह कनाडा में प्रकाशित होने वाली एक त्रैमासिक पत्रिका 'प्रवासी भारतीय' की मानद संपादक रही हैं। उन्होंने उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्यिक पत्रिकाओं 'साहित्य भारती', 'अतएव' और 'बाल वाणी' का संपादन किया है। वह वरिष्ठ साहित्यकारों की साहित्यिक रचनाओं सहित अवधी ग्रंथावली, अपरिहार्य परिक्रमा की संपादक, ब्रज भाषाकोश, अवधी कोष की सहयोगी संपादक रही हैं। उन्होंने साल भर पर्व (डॉ. विद्यानिवास मिश्रा द्वारा लिखित); भारतीय वांगमय में धर्म और संस्कृति; हमारे अक्षर; आर्ष परंपरा एवं आधुनिक बोध; राम कथा का वैश्विक परिदृश्य (शिव सिंह सरोज द्वारा रचित); चेहलारी नरेश राजा बलभद्र सिंह और उनके सैनिकों की वीरता तथा बलिदान की काव्यात्मक गाथा जंगनामा के अनुवाद का संपादन किया है। उनके छह व्याख्यानों को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के ई-पथ से प्रसारित किया गया था। वह रामकथा विश्वकोश, संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश की संपादक हैं। उनके 3500 से अधिक लेख विभिन्न साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। वह लेखक, निर्देशक, विभिन्न धारावाहिकों, लघु फिल्मों, फीचर, नाटकों, पैनल चर्चा आदि की समन्वयक के रूप में आकाशवाणी और दूरदर्शन तथा अन्य संचार माध्यमों से जुड़ी हुई हैं।